http://www.rtuonline.com

प्रथम प्रश्न पत्र–प्राचीन काव्य

Time Allowed : Three Hours **Maximum marks : 100**

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

1. निम्नलिखित पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:

(क) माया महा ठगिनि हम जानीं।
तिरगुन फांसि लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।।
केसव के कंवला होइ बैठी, सिव के भवन भवांनी।।
पंडा कै मूरति होइ बैठी, तीरथ हू मैं पानी।।
जोगी क जोगिनी होइ बैठी, राजा कै घरि रॉनीं।।
काहू कै हीरा होइ बैठी, काहू कै कौड़ी कॉनी।।
भगतां के भगतिनिं होइ बैठी, तुरकां कै तुरकांनीं।
दास कबीर साहब के बंदा, जाकै हाथ बिकांनीं।।

अथवा

अब कैसे छूटै, राम नाम रट लागी।।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समानी।।
प्रभु जी तुम धन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी ज़ोति बरै दिन राती।।
प्रभु जी मुम मोती हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

(ख) ते नर नररूप जीवत भव–भंजन–पद–विमुख अभागी।।
निसिबासर रूचि पाप, असुचि मन, खलमति, मलिन, निगनपथ–त्यागी।।
नहिं सतसंग, भजन नहिं हरि को, स्रवन न राम–कथा–अनुरागी।
सुत–बित–दार–भवन–ममता–निसि सोवत अति, न कबहुँ मति जागी।।
तुलसीदास हरिनाम–सुधा तजि, सठ, हठि, पियत बिषय–विष माँगी।
सूकर–स्वान सृगाल–सरिस जन, जनमत जगत, जननि–दुख लागी।।

अथवा

पाट महादेह! हिये न हारू। समुझि जीउ, चित चेतु सँभारू।।
भाँर कँवल सँग होइ मेरावा। सँवरि नेह मालति पहँ आवा।।
पपिहै स्वाति सौं जस प्रीती। टेकु पियास, बाँधु मन थीती।।
धरतिहि जैस गगन सौं नेहा पलटि आव बरषा ऋतु मेहा।।
पुनि बसंत ऋतु आव नवेली। सो रस सो मधुकर, सा बेली।।
जिनि अस जीव करसि तू बारी। यह तरिवर पुनि उठिहि सवारी।।
दिन दस बिनु जल सूखि बिधंसा। पुनि सोइ सरवर सोइ हंसा।।

(ग) हरि–मुख–विधु मेरी अँखियाँ चकोरी।
राखे रहति ओटपट जतननि, तऊ न मानतिं कितिक निगोड़ी।।
बरबस ही इन गही मूढ़ता, प्रीति जाइ चंचल सौं जोरी।
बिबस भई चाहतिं उड़ि लागन, अटकतिं नैकु अँजन की डोरी।।
बरबस ही इन गही चपलता, करत फिरत हमहूँ सौं चोरी।

http://www.rtuonline.com
http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

'सूरदास' प्रभु मोहन नागर, वरषि सुधा–रस–सिन्धु झकोरी।

अथवा

निपट बंकट छवि नैना अटके।
देखत रूप मदन–मोहन को, पियत पियूष न भटके।
वारिज भवाँ अलक टेढ़ी मानो, अति सुगंध रस अटके।
टेढ़ी कटि टेढ़ी कर मुरली, टेढ़ी पग लर लटके।
मीराँ प्रभु के रूप लुभानी गिरधर नागर नट के।।

2. 'ढोला मारू रा दूहा' काव्य में विप्रलम्भ श्रृंगार का मार्मिक चित्रण किया गया है। इस कथन की समीक्षा कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द)

अथवा

कबीर की काव्यगत विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिये।

3. "नागमति का विरह–वर्णन हिन्दी–साहित्य की अमूल्य निधि है।" इस कथन के परिप्रेक्ष्य में जायसी के विरह वर्णन को स्पष्ट कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द)

अथवा

तुलसीदास की भक्ति–भावना पर विचार कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द)

4. "सूरदास में जितनी सहृदयता और भावुकता है, उतना ही चतुरता और वाग्विदग्धता भी है।" इस कथन की समीक्षा कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द)

अथवा

"मीरा के काव्य में श्रृंगार के दोनों पक्षों का सुन्दर चित्रण हुआ है।" इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द)

5. (क) काव्यगुण किसे कहते हैं? परिभाषा देते हुए किन्हीं दो काव्य–गुणों को उदाहरण सहित समझाइये।

अथवा

शब्द शक्ति को परिभाषित करते हुए व्यंजना शब्द शक्ति को सोदाहरण समझाइये।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण लिखिये :
(i) रूपक (ii) यमक (iii) उदाहरण (iv) अनुप्रास (v) अतिशयोक्ति

अथवा

पठितांश में प्रयुक्त किन्हीं दो छन्दों का उदाहरण सहित परिचय दीजिये।

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com